भाषा समृद्ध वातावरणः सीखने–सिखाने की कुंजी

– सुमनलता ध्यानी

भाषा समृद्ध वातावरण साक्षरता का पहला चरण होता है। बच्चे विद्यालय में जब प्रवेश करते हैं और गेट से ही उन्हें प्रिंट रिच वातावरण देखने को मिलता है तो उनकी पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ने लगती है। प्रिंट रिच वातावरण का बच्चों की सोच पर सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः ऐसे माहौल में वे पहले से बेहतर एवं जल्दी समझ पाते हैं। भाषा ही नहीं बल्कि सभी विषयों में उनकी पहले की अपेक्षा समझ और बढ़ने लगती है।

हमारे विद्यालय में जब अपने गांव के परिवेश से बच्चे आते हैं तो उनके घर परिवार और गांव की एक अलग छाप सभी बच्चों में स्पष्ट दिखाई देती है। ग्रामीण परिवेश का सीधा साधा जीवन और कहीं न कहीं अपने माता पिता की शिक्षा और रोजगार का प्रभाव भी उनमें दृष्टिगोचर होता है। गांव घरों के कच्चे मकान और वह भी एक रंग में रंगे नीरस सा वातावरण पैदा करते हैं। अतः बच्चों को विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में विद्यालय को स्वच्छ, आकर्षक और भाषा समृद्ध वातावरण प्रदान करना आवश्यक हो जाता है। भाषा समृद्ध वातावरण या प्रिंट रिच वातावरण बच्चों के लिए कक्षा के अंदर और संपूर्ण विद्यालय में बनाया गया वह माहौल है जिसमें प्रवेश करने पर बच्चा आनंद और रुचि के साथ आता है और देखकर समझना है और फिर पढ़ना शुरू करता है। विद्यालय भवन की दीवारें यदि सुंदर रंगों एवं चित्रों से सुसज्जित हैं तथा कक्षा कक्ष के अंदर भी कहानी चित्रण, मात्रिक अमात्रिक शब्दों के चार्ट, क्रिया शब्द, पहेलियां, शैक्षिक एवं पर्यावरणीय गतिविधि चार्ट एवं टी.एल.एम. लगे हों, जो कि सीखने सिखाने का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं तो विद्यालय में एक आकर्षक भाषा समृद्ध वातावरण का निर्माण होता है।

ावरण साक्षरता का पहला चरण होता है।

बच्चे विद्यालय में जब प्रवेश करते हैं और गेट से ही उन्हें प्रिंट रिच वातावरण देखने को मिलता है तो उनकी पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ने लगती है। प्रिंट रिच वातावरण का बच्चों की सोच पर सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः ऐसे माहौल में वे पहले से बेहतर एवं जल्दी समझ पाते हैं। भाषा ही नहीं बल्कि सभी विषयों में उनकी पहले की अपेक्षा समझ और बढ़ने लगती है।

विद्यालय में भाषा समृद्ध

वर्ष 2017–18 में मैं अपने विद्यालय में एकल शिक्षिका थी। बच्चों के पठन–पाठन के साथ ही कार्यालय की सभी जिम्मेदारियां संभाल रही थी। अपने बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया के अंतर्गत कुछ चार्ट मैंने बनाए तो थे लेकिन जब मैं बच्चों को पढ़ाती तो मुझे सभी विषयों के टॉपिक समझाने में बहुत समय लगता, जिसमें मेरा समय और ऊर्जा दोनों खर्च होते। दूसरे शब्दों में कहूं तो बच्चे भाषा के साथ अन्य विषयों में भी कमजोर थे। बच्चे उतनी रुचि नहीं ले रहे थे और जो बच्चे पढ़ाई में ज्यादा कमजोर थे। वे अनुपस्थित भी बहुत रहने लगे। मैं बहुत परेशान और असंतुष्ट थी कि कैसे यह सब सुधरेगा तभी अप्रैल 2018

में मेरे विद्यालय में एक शिक्षक हरीश चंद्र आर्य जी का समायोजन हुआ। वह मुझसे काफी सीनियर थे। जब मैंने उनके सामने विद्यालय के बच्चों की स्थिति एवं उनकी पढ़ाई के प्रति उदासीनता एवं अभिभावकों की निष्क्रियता और अन्य विद्यालयी समस्याओं को रखा तो उन्होंने सुझाव दिया कि हमें विद्यालय के प्रति समर्पण एवं बच्चों के प्रति अपनत्व का भाव रखकर काम करना होगा। इसके साथ ही विद्यालय को प्रिंट रिच बनाया जाए तो निश्चित रूप से शैक्षिक वातावरण तैयार होगा। मुझे उनका सुझाव अच्छा लगा क्योंकि यह बच्चों को सीखने सिखाने मैं सीधे–सीधे मदद कर रहा था।

SMC की बैठक में मंगलिया गांव के शेर सिंह नयाल जी ने 10 लीटर पेंट देने का वादा किया स इसके साथ ही मेरे विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं खुद मेरे सहयोग से एक कक्षा–कक्ष और ऑफिस को पेंट किया गया। पेंट करने के बाद कुछ चार्ट और टी.एल.एम. तैयार किए गए। ये चार्ट हिंदी, गणित, अंग्रेजी आदि और विषय आधारित थे ससामान्य ज्ञान, शब्द संग्रह, जानवरों, पक्षियों, दिनों के नाम, महीनों के नाम, अंगों के नाम, वस्तुओं के नाम, गणित में गिनती, पहाड़े, करोड़ तक की संख्याओं को पढ़ने वाले TLM, हिंदी मात्राओं संबंधी चार्ट और टी.एल. एम. तैयार करके लगाए गए। इस कार्य से बच्चों में उत्साह बढ़ने लगा स इसके साथ ही अब विद्यालय में 2 शिक्षक हो गए थे, इसलिए पढ़ाई में सुधार होने लगा। उसके बाद वर्ष 2019–20 में विद्यालय अनुदान आने पर स्कूल की दीवारों पर पुताई हुई। गेट को भी पेंट किया गया। गेट पर महीनों के नाम तथा शरीर के अंगों के नाम लिखे गए तथा गेट के दोनों तरफ बस्ता लिए एक बालक और एक बालिका का चित्र भी बनाया गया।

उसके बाद भाषा समृद्ध वातावरण बनाते हुए विद्यालय भवन की दीवारों पर कार्टून, पोस्टर, प्राकृतिक दृश्य, पशु, पक्षी, राष्ट्रीय प्रतीक, समुद्र में डॉल्फिन की उछल कूद प्रदर्शित वाली पेंटिंग, गणित में ज्यामितीय आकृतियां, अंग्रेजी में एक्शन वर्ड, उत्तराखंड, पौड़ी जनपद के नक्शे की पेंटिंग की गई। इन सब पेंटिंग को करने के बाद बच्चों को शिक्षण कार्य कराते समय इन सभी भाषा समृद्ध वातावरण का सहयोग लिया गया जिसके कारण विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति बन गई स अब बच्चे खुश होकर विद्यालय पहुंचते हैं। जब से विद्यालय में प्रिंट रिच हुआ तब से बच्चों के चेहरे पर भी मुस्कान प्रिंट रिच हो गई। यह सब देख कर हमें अपने कार्य पर बहुत खुशी और उत्साह था कि बच्चों के लिए एक सुंदर शैक्षिक वातावरण का निर्माण प्रिंट रिच वातावरण से संभव हो पाया।

कक्षा 1 व 2 के बच्चों के साथ सीखना–सिखाना

छोटे बच्चे बहुत कुछ घर से सीख कर आते हैं। जब वे विद्यालय में हमारे पास आते हैं तो बातचीत ही उनसे घुलने मिलने का मौका देती है। कक्षा 1 व 2 के बच्चों के साथ जब पशु पक्षियों के चित्र पर बातचीत की गई तो बच्चों ने पहले स्वयं के घरों में पाले जाने वाले पशुओं के बारे में बताया। फिर मैंने उनको हमारे राष्ट्रीय पशु बाघ और राजकीय पशु कस्तूरी मृग के बारे में बताया स इसी प्रकार राष्ट्रीय जलीय जीव गंगा डॉल्फिन को भी वे पहचान गए हैं स क्योंकि वह भी भाषा समृद्ध वातावरण में बनाई गई थी। हमें प्रिंट रिच वातावरण का सकारात्मक प्रभाव दिख रहा था। बच्चे आपस में भी चित्र देखकर एक दूसरे से बातचीत करने लगे। प्रिंट रिच वातावरण साक्षरता का पहला चरण होता है यह साफ दिखाई दे रहा था। मैं जब कक्षा एक के बच्चों को प्राकृतिक दृश्य के बारे में बताती और साथ ही दीवार पर बनाई गई पेंटिंग में सभी प्राकृतिक चीजें जैसे नदी, पहाड़, जंगल, मिट्टी, पत्थर, बेल, पशु– पक्षी, बादल, वर्षा के बारे में बताती तो वे ध्यान से देखते और प्रश्न करते हैं कि जानवर जैसे बाघ, हिरण, लोमड़ी हमारे घरों

के आसपास क्यों नहीं रहते? क्या हम उन्हें पाल सकते हैं?

क्या हम भी पक्षियों की भांति उड़ सकते हैं? उनकी इन सभी जिज्ञासा भरी बातों का मैं हर संभव प्रयास उनके प्रश्नों का उत्तर देने में करती। जैसे बाघ, हिरण इनको जंगल में रहना अच्छा लगता है क्योंकि बाघ एक हिंसक पशु है और हिरन एक शांत और सीधा पशु है। वह हमारे साथ घुलना–मिलना कम पसंद करते हैं इसी प्रकार क्या हम भी पक्षियों के जैसे उड़ सकते हैं। इनके बारे में मैंने बताया कि हमारा शरीर पक्षियों के जैसा हल्का नहीं होता और ना ही हमारे पंख और पूंछ होते है। पूछ उड़ने में संतुलन बनाए रखती है। इस प्रकार बच्चे उत्तरों से जब संतुष्ट होते तो वे आपस में भी बातचीत करते। जब उनसे कोई प्रश्न किया जाता तो वे उत्तर देते। इस प्रकार कक्षा 1 व 2 के बच्चों की भाव अभिव्यक्ति और सोच समझ बढ़ाने में प्रिंट रिच सहायक सिद्ध हुआ।

लेख सुधार

कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए अंग्रेजी भाषा की हैंड राइटिंग चार्ट लगाए गए हैं जिसका प्रयोग हम उनको कैपिटल लेटर्स और स्माल लेटर्स की पहचान और उनको लिखने में कराते हैं। Small letters के अक्षर चार लाइनों में किस अक्षर को कहां पर लिखना है श्यामपट्ट में अभ्यास कराया जाता है। एक श्यामपट्ट में अंग्रेजी लिखाने के लिए चार लाइने प्रिंट की गई है जैसे अंग्रेजी की कॉपी का पेज होता है। जिन पर पहले हम खुद लिखते हैं उसके बाद बच्चों से एक–एक करके लिखने को कहते हैं जिससे वे आसानी से लिख लेते हैं।

कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों के साथ सीखना–सिखाना

कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों को सिखाने में भी भाषा समृद्ध वातावरण बहुत लाभदायक लगा। जब तक भाषा समृद्ध वातावरण नहीं था बच्चे अपने सभी राष्ट्रीय प्रतीकों, चिन्हों, ध्येय वाक्यों को कम जानते थे। जब कक्षा 3 के बच्चों को सामान्य ज्ञान के अंतर्गत दीवारों पर बने राष्ट्रीय प्रतीकों चिन्हों के बारे में बताया गया तो वे पहले से ज्यादा रुचि लेकर बार–बार उस जगह जाकर पढ़ने लगे और कुछ ही दिनो में उन्हें सभा के बारे में पता हो गया। अब मैं कभी प्रार्थना सभा में उनसे पूछती हूं तो वे सब एक साथ बताने लगते हैं जिससे यह प्रतीत होता है की प्रिंट रिच वातावरण से इन्होंने कम समय में सीखने समझने में मदद की है। इसी प्रकार इंग्लिश विषय में भी print rich environment बनाने का प्रयास विद्यालय में किया गया है। पहले जब मैं कक्षा चार या कक्षा 5 के बच्चों से 10 या 15 words किसी भी चीज जैसे things, parts of body, animal name, fruits name पर बताने को कहती तो 15 में से 5 बच्चे ही बोलते और लिख पाते थे परंतु अब 15 में से 12 बच्चे बोलते हैं लिखते हैं और समझ रखते हैं। इसी प्रकार action word को याद कराने के लिए एक fish वाले print rich environment का प्रयोग मैं अपनी अंग्रेजी कक्षा में करती हूं। बच्चों को action word painting से पढ़ाती हूं और हाव–भाव के साथ उसका अर्थ बताते हुए english sentence में प्रयोग करके बताती हूं। जैसे–

(1) fly का अर्थ उड़ना और वाक्य बनेगा The birds fly in the sky.

(2) Read का अर्थ पढ़ना और वाक्य होगा I read this book.

इसी प्रकार बच्चे भी action words से स्वयं वाक्य बनाकर बोलते हैं।

(3) इसी प्रकार गणित विषय में भी टी.एल.एम. जो तैयार किए गए हैं उनमें इकाई से लेकर करोड़ तक भी संख्याओं का प्रयोग करना बताते हैं जिससे बच्चे आसानी से प्रयोग करते हैं और लिखते हैं। ज्यामिति संरचनाओं को समझाते समय विद्यालय के सामने वाले खंभों पर जो ज्यामितीय आकृतियां वृत्त, वर्ग, घन, घनाभ, आयत, त्रिभुज, शंकु इत्यादि बनाई गई हैं। उनका प्रयोग गणित शिक्षण के दौरान करती हूं। जैसे मुझे कक्षा 4 के बच्चों को घन पढ़ाना है तो मैं painting की सहायता से घन के सभी फलक के बारे में बताती हूं कि घन 6 फलक वाली ज्यामितीय आकृति है इसमें 8 शीर्ष 12 किनारे और 6 फलक होते हैं स जो इस चित्र में साफ दिखाई दे रहे हैं। घन जैसी अन्य आकृतियां लूडो के पासे मैं दिखाई देती है। फिर बच्चों से बातचीत कर प्रश्न पूछती हूं।

प्र.1. शीतल बेटा घन में कितने फलक दिख रहे हैं?

उ. घन में छह फलक दिख रहे हैं।

प्र.2. कनिष्क आप बताओ घन में कितने शीर्ष होते हैं?

उ. घन में 8 शीर्ष होते हैं।

प्र.3. शिवम और कनिष्क आप बताओ कि घन में कितने किनारे/कोर दिख रहे हैं?

उ. घन में 12 कोर दिख रहे हैं।

प्रारंभिक भाषा साप्ताहिक सत्रों से भी भाषा समृद्ध

वातावरण के साथ विद्यालय में बच्चों के साथ कार्य करते हुए एक नए नजरिए से भी पठन–पाठन कराने में मदद मिली है क्योंकि भाषा सत्रों में बच्चों को सिखाने की प्रक्रिया में उनसे बातचीत सुनना,बोलना, पढ़ना, लिखना जैसी दक्षताओं के विकास। कविता, कहानी में उपयुक्त संदर्भ का प्रयोग, कहानी में चित्र पठन, शीर्षक कहानी के सुनाने के ढंग और कहानी के सभी पात्रों पर बातचीत और निष्कर्ष जैसे इन सभी बिंदुओं पर नए नजरिए से समझने का मौका मिला है जिसे हम बच्चों के साथ भाषा शिक्षण की कक्षाओं में प्रयोग कर रहे हैं।

इसी प्रकार अन्य विषयों जैसे हमारे आसपास में भी कई topic जैसे जल चक्र, पौधे के भाग इत्यादि को समझाने में भाषा समृद्ध वातावरण का सहयोग मिला है। बच्चों को बताती हूं कि किस प्रकार नदियों और समुद्र से पानी सूर्य के ताप से गर्म होकर भाप बनकर उड़ जाता है और बादलों के रूप में एकत्र कर लिया जाता है और यही पानी फिर वर्षा के रूप में धरती पर लौट आता है। बच्चों को इससे संबंधित प्रश्न पूछती हूं।

प्रश्न– अनीश, सबसे अधिक पानी कहां होता है? (नदी में, समुद्र में, तालाब में)

उत्तर– समुद्र में सबसे अधिक पानी होता है।

प्रश्न– अपेक्षा, समुद्र में कौन–कौन से जीव होते हैं?

उत्तर– व्हेल, मगरमच्छ, मछलियां, डॉल्फिन, शार्क इत्यादि।

इस प्रकार मुझे यह महसूस हुआ कि प्रिंट रिच वातावरण बन जाने से कक्षा एक से दो की मौखिक रूप से और कक्षा 3 से 5 तक को समग्र रूप से सभी विषयों में लाभ हुआ क्योंकि पहले जब ऐसा वातावरण नहीं था तब बहुत ज्यादा समय और ऊर्जा लगती थी। वह समय और ऊर्जा अब हम अन्य शैक्षिक गतिविधियों को कराने में प्रयोग करते हैं जिसके कारण विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में भी निरंतर सुधार हो रहा है।

इसके अतिरिक्त बच्चों के अभिभावकों में भी विद्यालय के प्रति आदर और हम दोनों शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना विकसित हुई है। यह सब भाषा समृद्ध वातावरण प्रभाव था। अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर अब पहले से अधिक रूचि दिखा रहे हैं।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय मंगलिया गांव, यमके वर, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड में अध्यापिका हैं)

पृष्ठ 67 को शेष...

शुरुआती गणित' और 'शुरुआती भाषा' की कुछ गतिविधियाँ

- बड़ा- छोटा की पहचान, मोटा पतला की पहचान
  पास की चीजें, दूर की चीजें
  स्कूल के पौधे पहचानना, उनके नाम लिखना
- कोण ढूंढना, कहाँ-कहाँ समकोण, कहाँ नहीं
- विलोम शब्द बताना
- एक अर्थ के अनेक शब्द
- जानवरों के नाम लिखना
- रैपर पढ़ना, जगह जगह छपी हुई चीजों के नाम पढ़ना
- अख़बार पहचानना, अख़बार पढ़ना
- स्कूल की किताबों के नामों का चार्ट बनाना
- बॉडी पार्ट्स के नाम/ प्रयोग
- डिक्टेशन- बोला हुआ लिखना, लिखा हुआ बोलना
- अपनी पढ़ी हुई कहानी को सुनाना
- अपनी पढ़ी हुई कहानी का सार लिखना
- पढ़ी हुई कहानी से नई कहानी बनाना
- पढ़ी हुई कविता से नई कविता बनाना
- रंग पहचानना, उनके नाम लिखना
- मापना सीखना- हाथ से, पैर से/ मापने का पैमाना बनाना
- कंकड़ से या पत्तियों से गिनना
- फूलों के नाम बताना, लिखना
- कोई शब्द तोड़कर दूसरा शब्द बनाना/ राम का मरा, राज का जरा